॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वत्र जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरङ्गें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन् मैं तो सँसार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस सँसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि सँसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह सँस्कार जमते चले जायेंगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अँकुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्रोत ही नष्ट हो जाये और यह स्रोत उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्त्र में दृष्टिपात करूँगा और मौन हो जाऊँगा कि सँसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 570 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 645
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आत्मा के स्वरूप (प्रथम-भाग)	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-23
4. आत्मा के स्वरूप (द्वितीय-भाग)	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-39
6. ऋषियों के उद्‌गार		40
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		41-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

आत्मा के स्वरूप

(प्रथम-भाग)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वे पुरोहित हैं। पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं और वे विष्णु हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में विष्णु का बड़ा वर्णन आता रहा है। और विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है। हम उस परमपिता परमात्मा को विष्णु कहा करते हैं क्योंकि वह सत्य में ही रत्त रहने वाला है और सत्य में ही पालना का मूल रहता है! इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। क्योंकि वह अनन्तमयी है और वे अनन्तवान हैं। और उसका अनन्तमयी ये ब्रह्माण्ड है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे सीमा में आने वाले नहीं हैं इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र उसकी महती का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वे माता वसुन्धरा के रूप में विद्यमान हैं। जो अपने में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को बसाने

वाला है, अपने में ही धारणा कर रहा है। उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव उसका गुणगान गाते रहते हैं।

दो प्रकार का विज्ञान

आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें उस महान् देव की जहाँ प्रशंसनीय और उसकी महती के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। ज्ञान और विज्ञान की महिमा का सदैव वर्णन होता रहा है। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों के मध्य में दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है। हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान प्रायः माना गया है। एक भौतिक विज्ञान है और द्वितीय आध्यात्मिक विज्ञान कहलाया गया है। तो मेरे पुत्रों! हमारे यहाँ दोनों प्रकार के विज्ञान की महिमा का गुणगान गाते हुए ऋषि-मुनियों ने अपना-अपना मन्तव्य दिया है। क्योंकि उनके यहाँ दोनों प्रकार की विचारधाराएँ उनके मस्तिष्कों में सदैव नृत्त करती रहीं। क्योंकि दोनों प्रकार के विज्ञान में–एक तो चाहता है कि संसार में वह अणु और परमाणुओं में रत्त होता हुआ और नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता हुआ उनमें लोक-लोकान्तर और मानो भौतिकवाद में परणित हो जाऊँ। एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है, वह यह चाहता है कि मैं संसार को जानने लगूँ। और संसार में जितने भी अव्यय हैं, जितनी भी धाराएँ हैं, वे चाहे ज्ञान में हों, चाहे विज्ञान में हों, परन्तु उनको जानते हुए हम मृत्यु से पार हो जाएँ। क्योंकि प्रत्येक मानव की एक ही आकांक्षा बनी रहती है, क्या मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ। प्रत्येक मेरी प्यारी माताएँ ये चाहती हैं कि मैं मृत्यु से मेरा जीवन ओझल हो जाए, प्रत्येक प्राणी चाहता है। तो विचार आता रहता है कि मृत्यु के सम्बन्ध में हमारे यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का प्रायः विचार-विनिमय होता

रहा है। और उन विचारधाराओं में एक से एक ऊर्ध्वा में विचार अपने में रत्त में होना उनका प्रारम्भ हुआ।

महर्षि जगदग्नि आश्रम में ऋषि-मुनियों का मृत्यु पर चिन्तन

मेरे पुत्रों! आओ, आज मैं तुम्हें मानो देखो एक आध्यात्मिक विज्ञान की विवेचना में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और मृत्यु के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करते रहे हैं। तो मुनिवरों! मुझे स्मरण आ रहा है, आज बेटा!, मैं तुम्हें एक ऐसी स्थली पर ले जा रहा हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि अपने में एकत्रित हो करके बेटा! अपना विचार-विनिमय प्रारम्भ करते रहे हैं। अपनी धाराएँ, मानो अपने आन्तरिक और बाह्य जगत के ऊपर वो विचार-विनिमय जब प्रारम्भ करते रहे हैं, तो उनका मानवीयत्व एक महानता में गमन करता रहा है। मुझे स्मरण आ रहा है बेटा! एक समय महात्मा जमदग्नि आश्रम में एक सभा हुई बेटा! जिसमें मुनिवरों! देखो, महर्षि प्रह्लाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, चाक्राणी गार्गी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ताः और ब्रह्मचारी व्रेतकेतु, जिसमें महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज विद्यमान थे और भी नाना ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ। तो मुनिवरों! देखो, उसमें ये विचारधारा प्रारम्भ हुई। महर्षि जमदग्नि आश्रम में पारेत्वर ऋषि महाराज के कथनानुसार बेटा! उन्होंने एक वेद मन्त्र का उद्गीत गाया और वेद मन्त्रों में कहा, **"ब्रह्मणे व्रतम ब्रह्माः क्रतप्रव्हा, वृश्चनम् ब्रहि व्रतम देवाः"।** मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहा है, क्या महात्मा जमदग्नि ने एक वेद मन्त्र उन्होंने उद्गीत रूप में गाया। और उन्होंने कहा, क्या हे ऋषि अमृतम्! मैं यह जानना चाहता हूँ कि संसार में मृत्यु क्या है। मेरे प्यारे! देखो वेद मन्त्र का आशय यही प्रश्न कर रहा था। हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में एक विशेषता रही है, क्या एक मन्त्र प्रश्न कर रहा है, वही उसका उत्तर दे रहा है। तो मेरे पुत्रों! वेद का मन्त्र कहता है, **व्रतम**

ब्रव्हा कृत देवाः, वेद का मन्त्र कहता है कि ये मृत्यु क्या है? जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक मानव अपने में व्याकुल हो रहा है। मेरी पुत्रियाँ! व्याकुल हो रही हैं। माताएँ व्याकुल हो रही हैं। प्रत्येक प्राणीमात्र मानो देखो इससे दुखित हो रहा है। ये क्या है?

चाक्राणी गार्गी के उद्‌गार

मेरे पुत्रों! देखो, चाक्राणी गार्गी ने उपस्थित होकर के कहा, क्या हे भगवन्! मेरे विचार में ये आता है कि शरीर और आत्मा का, दोनों का विच्छेद होना ही, मानो देखो पृथक् होना ही मृत्यु कही गयी है। मेरे पुत्रों! इसमें महर्षि प्रह्लाण ने कहा, हे दिव्या! ये हमारे विचार में नहीं आ रहा है। यहाँ मृत्यु शब्द नहीं बनता है। यदि आत्मा पृथक् है, शरीर पृथक् है, तो मृत्यु क्या है? मेरे पुत्रों! देखो चाक्राणी ये उद्‌गीत गाती अपने में शान्त हो गयी।

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज का निर्णय

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने ये कहा, **''सम्भवम् व्रतम ब्रव्हे कृतम नधत्मधम्''**। मेरे प्यारे! देखो वेद मन्त्रों का उद्‌गीत गाते हुए महर्षि पिप्पलाद ने कहा कि संसार में मृत्यु का अभाव है। मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती। क्योंकि इसका अभाव परम्परागतों से ही ऋषि-मुनि अपने मस्तिष्कों में मनन और चिन्तन करते हुए दार्शनिक रूप में मानो ये सिद्ध नहीं होता, क्या मृत्यु भी कोई वस्तु है। तो मेरे पुत्रों! देव इत्यादि ऋषियों ने, उन्होंने इस वाक्य का समर्थन किया और पिप्पलाद जी ने भी इस वाक्य को माना। पिप्पलाद जी ने कहा कि मेरी माता, माता ने मुझे यही शिक्षा दी कि **हे अमृतम ब्रह्माः संसारा स्वतम् ब्रव्हे,** क्या ये जो संसार है, ये निस्सार है। इसमें कोई सार नहीं है। जब मुझे मेरी प्यारी माता ये कहा करती तो बाल्यकाल में ही ये प्रश्न करते रहे, क्या वास्तव में जो आपने कहा, ये तथ्य यथार्थ है। उन्होंने कहा,

यथार्थ है। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा, **मृत्युञ्जय भवतम्,** उन्होंने कहा, **अन्धकाराम् रूपम् ब्रव्हे क्रतम्**। माता ने ये कहा कि अन्धकार को त्यागना ही जीवन है। मेरे पुत्रों! **ज्ञान में जाना ही जीवन है।** ये मेरी प्यारी माता ने मुझे मानो देखो उद्गीत रूप में गाया। इस वाक्य को मैंने स्वीकार कर लिया। और ये वाक्य मैं सदैव सञ्चार करता रहता हूँ।

मेरे पुत्रों! महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज से, आदि सर्वत्र ऋषियों ने ये कहा कि भगवन् आपने जो ये कहा है कि मृत्यु का अभाव है तो मृत्यु शब्द बनता कैसे है हम ये जानने के लिए सदैव लालायित रहते हैं। उन्होंने कहा ये जो मृत्यु शब्द है ये **अज्ञानाम् भवितम् ब्रह्मणे व्रतम् देवत्वाम् ब्रह्माः** ऋषि ने कहा कि ब्रह्मवेत्ताओं का ये मत रहा है, क्या वह अन्धकार को त्यागने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे हैं। जितनी भी विचारधाराएँ हैं संसार में–चाहे वह विचारधारा मानो देखो आध्यात्मिकवाद से ओतप्रोत हों, चाहे वह विचारधारा दर्शनों से ओतप्रोत हों परन्तु देखो मानवीय दर्शन सर्वत्र का एक ही मन्तव्य रहा है कि संसार में अज्ञान नहीं रहना चाहिए। अज्ञान से विमुख होना चाहिए। और ज्ञान में परणित होना चाहिए क्योंकि ज्ञान ही हमारे लिए एक महत्त्वदायक माना गया है।

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज और उनकी पत्नि शकुन्तका का सम्वाद

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो मुनिवरों! संध्या का काल हो गया। सब ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने आसन को त्याग करके वह तो संध्या की पुलकित आनन्दमयी रमण कर गए। अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे। परन्तु महर्षि पिप्पलाद मुनि ने बहुत समय से अपने गृह को त्याग दिया था। वह मेरे पुत्रों! देखो अपने गृह में, उनका गृह बहुत ही आश्रम निकटतम था। वह अपने गृह में पहुँचे। उनकी मानो जैसे ही आश्रम में पहुँचे तो उनकी देवी व्याकुल हो गयी। और व्याकुल हो करके कहा, हे देवब्रहा! पिप्पलाद मुनि बोले, देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा, हे प्रभु! मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था, वह मृत्यु

को प्राप्त हो गया है। पिप्पलाद मुनि बोले, हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है, मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से पधार रहा हूँ। और ब्रह्मवेत्ताओं में मैं यह निर्णय देता रहता हूँ, क्या मृत्यु का अभाव है। तुम ये क्या उद्गीत गाने लगी हो। उन्होंने कहा, हे भगवन्! ये वाक्य मैंने स्वीकार कर लिया, क्या मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन्, क्या जो हमारे समीप मानो एक बाल्य था, और वह आज नहीं रहा। यह क्या है?

परमाणुवाद

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा, यही तो परमाणुओं का विच्छेद होना है। परमाणु अपने-अपने स्वरूप में प्रवेश हो जाते हैं। मानो देखो, आत्मा अपने-अपने रूप में चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने उद्गीत रूप में गाया। उन्होंने कहा हे भगवन्! चलो मैंने ये भी स्वीकार कर लिया। परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, क्या ये परमाणुवाद कहाँ रहता है, क्या है? उन्होंने कहा, इन परमाणुवाद से हमारा जो शरीर है, ये जो तुम्हारा शरीर है, ये परमाणुओं का ही तो एक सङ्घात है, परमाणुओं की प्रतिवृत्तियाँ कहलायी गयी है। उन्होंने कहा, हे दिव्यम् ब्रह्माः!, हे देव! ये परमाणुवाद, मानो जब मेरा ये शरीर इस रूप में नहीं था तो ये परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा, हे देवी! ये परमाणुवाद, जब तुम्हारा शरीर इस रूप में नहीं था, इन्हीं परमाणुओं से माता के गर्भस्थल में मानो ये परमाणुवाद था और इन्हीं परमाणुओं से तुम्हारे इस मानव शरीर का निर्माण हो रहा था। और वह **निर्माणवेत्ता** निर्माण कर रहा था जो संसार का निर्माणवेत्ता है। जो निर्माणवृतम्, वह ऐसी पवित्र निर्माणशाला है। मानो जहाँ निर्माण होता रहता है माता के गर्भस्थल में, कहीं बुद्धि का निर्माण है, कहीं मेधा है, कहीं प्रज्ञा है, कहीं मानो देखो वृत्तियों में रत्त रहने वाली मानो कृषित्या कहलायी जाती है। हे देवी! निर्माण करने वाला, निर्माण कर रहा है। परन्तु मेरी भोली माँ को तो कोई ज्ञान नहीं होता। कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि कहता है, सम्भवब्रहे,

मानो देखो माता के गर्भस्थल में जब निर्माणवेत्ता निर्माण करता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता रहता है। मानो देखो वो निर्माणवेत्ता वो चेतन्य देव है। निर्माण करता रहता है। वह कितना भव्य निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में, कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, कहीं प्रज्ञा का निर्माण हो रहा है। कहीं मेधावी है, कहीं ऋत्मभरा का निर्माण हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, हृदयस्थली में मानो देखो अनुष्ठान स्थली पर कहीं हृदय को स्वीकार किया गया है। कहीं मेरे पुत्रों! देखो, मानव के मस्तिष्क में मानवीयत्व में देखो वह हृदय को और अमृतम् को उन्होंने स्वीकार किया है।

मेरे पुत्रों! देखो, वह **परमपिता परमात्मा निर्माणवेत्ता है।** माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो, विज्ञान की पुष्टिता का हमें ज्ञान होता है। माता के गर्भस्थल में, हे देवी! एक बिन्दु होता है, उस बिन्दु में शिशु है। और शिशु के प्रवेश होते ही मानो सर्वत्र देवता उसकी रक्षा के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, चन्द्रमा अमृत देने लगता है। सूर्य प्रकाश देता है। और मुनिवरों! देखो, ये पृथ्वी गुरुत्व देना प्रारम्भ करती है। और देखो ये जल तरलत्त्व, **''जलम् ब्रह्मणा व्रतम्''**। मेरे प्यारे! देखो, जल ही उसका ओढ़न है, जल ही बिछौना है और जल ही पाशे बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, शिशु पनप रहा है। अग्नि उष्ण बना रही है। वायु प्राण दे रहा है, अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है। वा रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। आज जब हम तेरे विज्ञान की महिमा का गुणगान हम गाने लगते हैं तो देखो वह शब्दों से वह गुणगान गाया नहीं जाता। मेरे पुत्रों! देखो, जब माता के गर्भस्थल में शिशु, हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो मेरे पुत्रों! देखो यह **जलम् धरत्व प्रमाणम् ब्रव्हे।** मेरे प्यारे! देखो, यह जो आपोमयी ज्योति है जिसे हम जल के रूप में वर्णित करते रहते हैं यही बेटा! देखो, आसन बन करके रहता है। ओढ़न और पाशे बन करके और उसी के आङ्गन में बेटा! विद्यमान रहता है, परन्तु चन्द्रमा अमृत दे रहा है। मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं है कैसे अमृत दिया जा रहा है। जब हम

आयुर्वेद की दृष्टि से अथवा वैदिक सिद्धान्त से इसको हम विचारने लगते हैं तो मेरे प्यारे! देखो माता के रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। और नाड़ी का, अमृतम् बेटा! उस नाड़ी का समन्वय पुरातत्त्व नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत्व नाम की नाड़ी का जो समन्वय है, वह मुनिवरों! देखो, माता की लोरियों से और माता की लोरियों से पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है। और वह मुनिवरों! देखो, माता की नाभि से और बाल्य की नाभि से उसका समन्वय हो जाता है। बेटा! अमृत बहाया जा रहा है। अमृतमयी पान किया जा रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है सर्वत्र विज्ञानधारा को आपने मानो शिशु की पालना में ही अर्पित किया है। इससे बेटा! हमें यह सिद्ध होता है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। तो मुनिवरों! देखो, **''ब्रह्मणे व्रतम् देवाः''** जब ऋषि ने इस प्रकार अपनी देवी को वर्णन कराया। हे देवी! मानो देखो, यही तो अमृत है, इसी को तो पान करना है। इस विज्ञानधारा में रत्त रह करके अपनी मानवीय दर्शन के ऊपर अध्ययन करना है।

मेरे पुत्रों! देखो, इतने में देवी ने कहा, प्रभु! ये वाक्य तो देखो मेरी प्यारी माता मुझे वर्णन कराती रही हैं। और विद्यालय में, मैं जब अध्ययन करती थी तो मुझे इस ज्ञान की चर्चाएँ, विज्ञान की विवेचनाएँ प्रायः होती रही हैं। हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ जब माता का गर्भाशय नहीं होता, तो ये परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन्! उन्होंने कहा, हे देवी! ये परमाणुवाद, जब माता का गर्भाशय नहीं होता तो ये परमाणुवाद मानो देखो कुछ वीरत्व में रहते हैं, कुछ मानो वीराङ्गनात्व में रहती हैं। इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री **वीराङ्गना** बन जाती है। इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है और वो देवताओं की सभा में सुशोभनीयता में दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है **''सम्भवम् ब्रह्मणे सम्भवा लोकाम्''** वेद का आचार्य कहता है, मेरे पुत्रों! देखो

वीराङ्गना के सम्बन्ध में, क्या इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीराङ्गना बन करके मुनिवरों! देखो वेदों का उद्गीत गाती है। ऋषि कहता है–हे देवी! एक समय मुझे स्मरण है, क्या मानो हम भयङ्कर वन में चले गए। तो भयङ्कर वनों में मुनिवरों! देखो वीराङ्गना चाक्राणी गार्गी अपने में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करती हुई, मानो देखो परमाणुओं की रक्षा करने वाली, दिव्याम् भूतम् ब्रह्मणेः। मानो देखो वेदों का उद्गीत गा रही थी। भयङ्कर वनों में एकान्त स्थलियों में वेदों का उच्चारण करती हुईं, मन्त्रों में उच्चारण करती हुई अपने में मानो रत्त हो रही थी। शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, अपने में गान गा रही थी।

मुनिवरों! देखो, उनके आश्रम में श्रवण करने वाले सिंहराज, श्रवण करने वाले मृगराज, सर्पराज, बेटा! देखो उसकी आभा को अपने में ग्रहण कर रहे थे। मेरे पुत्रों! देखो, वेदों का जो ज्ञान है अथवा जो गान है, जब इसको जटा पाठ या माला पाठ में गाया जाता है तो मानो देखो अपनी बाह्य प्रवृत्तियों से आन्तरिक जगत में प्रवेश हो करके जब गान गाता है तो मेरे पुत्रों! कोई प्राणी ऐसा अभागा नहीं है जो अपने पिता की मानो देखो गुणों को गुणवादन अथवा उसके गुणों को अपने में श्रवण करने वाला न हो। मेरे पुत्रों! देखो, सर्पराज उस ध्वनि को अपने में श्रवण कर रहा है, सिंहराज उस ध्वनि को अपने में श्रवण कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो कैसा ये प्रियतम गायन है। जब मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ जब वेदों का उद्गीत गाने वाला माला पाठ में गाता है, जटा पाठ में गाता है। उदात्त, अनुदात्त में गान गाने वाला बन जाता है तो बेटा! प्रत्येक प्राणी उसको श्रवण करने के लिए तत्पर हो जाता है। क्योंकि सर्वत्र प्राणियों का वह एक मात्र प्रभु ही पितर के रूप में परणित रहता है, माता के रूप में परणित रहता है। तो उसकी महिमा और उसकी महानता को बेटा! कौन प्राणी नहीं चाहता है कि हम उसको ग्रहण न करें। प्रत्येक प्राणी चाहता रहता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी! इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्रियाँ वीराङ्गना अपने ब्रह्मवर्चोसि का पालन करती हैं और अपने

में धारयामि बन करके गान गाने वाली हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वेदों का जब उद्गीत गाया जाता है तो प्रत्येक प्राणी की अन्तरात्मा में एक मानो आत्मीयता के भाव उसमें उत्पन्न हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, ये वीराङ्गना है और एक वीरत्व कहा जाता है, वही परमाणु बेटा! वीरत्व के रूप में विद्यमान रहते हैं। **वीरत्व** वह कहलाता है जो ब्रह्मवर्चोसि का पालन करता है। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों से यही प्रश्न करते रहे। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि ने कहा, हे देवी! ये प्रश्न, बड़े प्रशंसनीय कहलाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है, मैं भी इन प्रश्नों को, करता रहा हूँ। अपने पूज्यपाद गुरु देव के समीप विद्यमान हो करके मैं इन प्रश्नों को, जिज्ञासा को ले करके मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव के समीप जब विद्यमान होता तो मैं कहता रहता, हे प्रभु! ये वीरत्व क्या है? तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि वीरत्व वह जो परमाणुओं की रक्षा करने वाला हो। जो अपने में ओज और तेज की उत्पत्ति करने वाला हो। मानो देखो, उसे वीरत्व कहते हैं। मैं, अपने पूज्यपाद गुरु देव से पुनः ये प्रश्न करता कि हे भगवन्! ये वीरत्व कौन है? तो उस समय देखो, पूज्यपाद गुरु देव, मुझे इसका उत्तर देते, क्या वीरत्व वह कहलाता है, जो मानो अपने परमाणुओं की रक्षा करता हुआ वीरत्व, मानो उस ब्रह्म की आभा में रत्त रहने वाला हो। मेरे पुत्रों! ब्रह्म की आभा क्या है? ब्रह्म का ज्ञान और विज्ञान इतना अलौकिक और अनूठा कहा जाता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही विचार-विनिमय करता रहा है। हे दिव्या! ''ब्रह्मणे क्रतम्'' मानो देखो उन्होंने कहा कि वीरत्व ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव से ये प्रश्न करता रहा कि ये **ब्रह्मचारी** कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म और चरि को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जो प्रकृति को और ब्रह्म को अङ्गों-उपाङ्गों से जानने वाला है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। जब मैंने पुनः ये प्रश्न किया, क्या महाराज, ब्रह्मचारी कौन है। तब देखो, पूज्यपाद यह कहते कि ब्रह्मवर्चसम्

ब्रह्माः मानो जो ब्रह्मचारी प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके, जैसे देखो, नेत्रों का जो विषय है, वह रूप है और चक्षुओं का जो मानो स्वरूप है वह शब्दम् ब्रह्मा है, शब्द है। रसना का विषय रस है और घ्राण का विषय गन्ध-सुगन्ध है। और मुनिवरों! देखो, त्वचा का विषय अमृतम् स्पर्श है। ये प्रत्येक इन्द्रियों के पञ्चीकरण को ले करके जो इनका साकल्य बनाना जानता है, जो इनका साकल्य बना करके अन्तिम मानो साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में जो याग करता है। मानो देखो यजन करता है, वह ध्यावस्थित हो जाता है। मन और प्राण को ले करके, मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय करता है, वो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी!, मैं अपने पूज्यपाद गुरु देव से पुनः बोला कि हे देवत्वम्! हे ऋषिवर! मैं जानना चाहता हूँ, ये ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो प्रत्येक मानो श्वास की जो गतियाँ चल रही हैं, प्रत्येक श्वास का मनका बना करके जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है, मेरे पुत्रों! देखो वह ब्रह्मचारी कहलाता है।

वेद के आचार्य ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा, हे दिव्या! मैंने पुनः कहा कि भगवन् ये ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो प्रत्येक अपने शरीर में जितने अङ्ग हैं और उनमें जो चक्र हैं, अष्ट चक्रा नौ द्वारा, मानो देखो ऐसी अयोध्यापुरी को जो जानने वाला है, और जान करके उसके निर्माणवेत्ता ब्रह्म को स्वीकार करता है तो ब्रह्मचारी कहलाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब ये कहा, हे देवी! मेरे पितर ने, मेरे आचार्य ने मुझे जो निर्णय कराया है, मैं आज तुम्हें वो निर्णय दे रहा हूँ। तुम इसको स्वीकार करो। उन्होंने कहा, **''ब्रह्मणे क्रतम ब्रह्मणे रूद्राः ब्रह्मणे क्रतम देवत्वाम् देवाः''** क्या ब्रह्मणे व्रतम, जो ब्रह्म को जानने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म की चरि को जो चरने वाला है वह ब्रह्मचारी है। ब्रह्म की चरि को कौन चरता है, मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि

को, जो परमाणुओं की रक्षा करना जानता है। मेरे प्यारे! जो ब्रह्म को और चरि को, दोनों को एक सूत्र में लाता हुआ और मुनिवरों! देखो मनस्तत्त्व को उसमें पिरो देता है, वही मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं बहुत विशाल वन में नहीं जाना चाहता हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ। तुम्हें केवल मैं एक परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है। परिचय ये है कि **ब्रह्मम् ब्रहे क्रदम्**, उन्होंने कहा–हे देवी! संसार में यही परमाणुओं की रक्षा करने वाला **ब्रह्मवेत्ता** कहलाता है, ब्रह्मचारी कहलाता हे। ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है और वही मानो देखो अन्धकार से प्रकाश के लिए गमन करता है। मुनिवरों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया–वर्णनवेत्ता जब वर्णन करने वाले ने, तो देवी ने कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ भगवन्, जब मानो ये माता देखो वीरत्व और वीराङ्गना भी नहीं होते तो इन परमाणुओं की रक्षा, अमृतम ब्रह्मेः ये परमाणुवाद कहाँ चला जाता है?

सात प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी! तुम्हें ये प्रतीत है कि सृष्टि के पिता ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है। जब सृष्टि को ये सृजन किया गया। मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का जिसने सृजन किया है उसी देव ने, मुनिवरों! देखो, सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। और सात प्रकार अन्न क्या है, उस अन्न को तुम जानते हो।

दो प्रकार का अन्न

सबसे प्रथम देखो यह जो अन्न है, यह साझा अन्न कहलाता है। एक ही पौधा है उस पे **दो प्रकार का अन्न** कहलाया गया है। एक अन्न को मानव पान करता है मनस्तत्त्व और एक को मानो देखो ये पशु इत्यादि पान करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब मानव उसे पान करता है तो वह ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। और जब पशु पान कर रहा

है तो मेरे पुत्रों! देखो, वह पय दे रहा है, वह दुग्ध दे रहा है। वह मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के अव्ययों को प्रदान कर रहा है। ये सृष्टि के पिता ने बेटा! एक पौधे को उत्पन्न किया। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। बेटा! एक ही पौधा है उसे मेरे पुत्रों! देखो, उस पे दो प्रकार का अन्न विद्यमान है। एक मानव का है, तो एक पशु अन्न कहलाता है। एक पय कहलाता है, एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है। एक अन्न मेरे पुत्रों! देखो पशु पान करता हुआ देखो पय दे रहा है, दुग्ध दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब मैं तेरे विज्ञान की महिमा का गुणगान गाने लगता हूँ तो मुनिवरों! देखो, कोई शब्द नहीं प्राप्त होता जो मैं आपकी प्रशंसनीयता का वर्णन कर सकूँ।

आओ मेरे पुत्रों! वेद का ऋषि कहता है, एक ही पौधा है। एक अन्न को मुनिवरों! देखो मानव पान कर रहा है औज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। वीरत्व को प्राप्त करा रहा है। और दूसरा जो अन्न है बेटा! ये दोनों अन्न सबके साझे अन्न कहलाते हैं। इसको साझा अन्न कहते हैं।

तीसरा अन्न–हुत

तीसरा जो अन्न है मेरे पुत्रों! देखो, उसे हुत कहते हैं। आहुति देने वाले को–याग करने वाला याज्ञिक याग कर रहा है और वह हुत कर रहा है। अग्नि के मुखारबिन्द में बेटा! नाना प्रकार के साकल्यों को प्रदान कर रहा है। मुनिवरों! देखों, अग्नि उसे सूक्ष्म बना देती है। उसको मेरे प्यारे! देखो, विभाजन करती हुई, और विभक्त करती हुई मुनिवरों! देखो, एक-एक परमाणु को शोधन करती चली जाती है। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, इसी विचार को ले करके, इसी हुत को ले करके ऋषि-मुनियों ने बड़ा गम्भीर अध्ययन किया है। जब मैं इन विचारों में प्रवेश करने लगता हूँ तो बेटा! एक अपने में अपनेपन का ही ध्यान आने लगता है। अपने में अपनेपन में समाहित हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो हुत करना, आहुति देना अग्नि में बेटा! देखो नाना प्रकार के साकल्य पदार्थों

को प्रदान करना वो हुत–याज्ञिक बेटा! अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है और यज्ञशाला में अपने पुरोहित से कहता है–हे पुरोहित! हे पराविद्या के देने वाले वाले, हे पुरोहित! मेरी त्रुटियों को शान्त करने वाले आ मैं अमृतम् देखो अग्नि के मुखारबिन्द में मैं साकल्य प्रदान करना चाहता हूँ। क्योंकि अन्नम् ब्रह्मणाः मैं होत्रि हूँ। मानो देखो, ये जो अग्नि है, ये सब देवताओं का मुख कहलाता है। ये देवताओं का मुख बन करके, ये सर्वत्रता में मानो प्रदान कर रहा है। देवता मानो देखो प्रसन्न हो रहे हैं।

मुनिवरों! देखो, ऋषियों ने एक लोलुप्ती प्रगट की इस सम्बन्ध में। कहते हैं कि एक समय, याग को मुनिवरों! देखो काला हिरण ले गया। और काले हिरण ने मुनिवरों! देखो वत्रासुर को प्रदान कर दिया। और वत्रासुर जब मानो देखो अभिमानी बन गया तो उस समय देखो अमृतम् मुनिवरों! देखो, इन्द्र और शचि ने जब इन्द्र से कहा, हे प्रभु! वत्रासुर का हनन होना चाहिए। तो उस समय देखो इन्द्र का, इन्द्र ने मानो अपने वज्र से उसको वर्जित करते हुए उस पर आक्रमण करके बेटा! धीमी-धीमी वृष्टि के रूप में वत्रासुर का विनाश हो गया। तो विचार आता रहता है बेटा! ऋषि-मुनियों ने अपनी बड़ी विचित्र लोलुप्तियों में कहा है क्या वह जो काला हिरण है वह मानो धुन्ध है। और याग को मुनिवरों! देखो, वह भावनाओं को और याग की सुगन्ध को अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, उससे मेघ मण्डलों का निर्माण होता है, मेघ मण्डलों को वत्रासुर कहा जाता है। मुनिवरों! देखो जब वत्रासुर छा जाता है तो उस समय मङ्गलम् ब्रव्हे, मेरे पुत्रों! वायु कहते हैं इन्द्र को और विद्युत कहते हैं शचि को, दोनों का सम्मिलन हो करके प्राणरूपी वज्र का जब निर्माण होता है और वह मेघ मण्डल पे जब आक्रमण किया जाता है वत्रासुर पर, तो उससे बेटा! वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है और जब ये वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है तो मुनिवरों! देखो, प्रथम ब्रह्माः व्रतम् देवत्वाम्, तो वह देखो, गऊ के बछड़े की यहाँ बलि का वर्णन आता रहा है। मुनिवरों! देखो, बलि का अभिपायः देखो उसे नष्ट करना नहीं है। बलि का अभिप्रायः है पुरुषार्थ करना। और वह अपने

पुरुषार्थ से मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रणाः, मानो देखो बीज की स्थापना करा देता है ये पृथ्वी, बेटा! नाना प्रकार की अन्नवान बन जाती है, नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है यही तो पृथ्वी है बेटा! जो गऊ के बछड़ों के आश्रित हो करके नाना प्रकार के अन्ननाद को प्रदान करती रहती है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने जा रहा हूँ बेटा! विचार ये दे रहा हूँ, क्या मुनिवरों! देखो, अमृतम् ब्रह्मणाः, ये तीसरा अन्न कहलाता है जो सृष्टि के पिता ने, बेटा! हुत के रूप में जिसकी रचना की है। मेरे प्यारे! इससे सूक्ष्म देवतात्त्व इससे प्रसन्न होते हैं। इसी अन्न से वायु मण्डल पवित्र बनता है। इसी याग से बेटा! अग्नि के मुखारबिन्द में साकल्य प्रदान करने से प्रदूषण प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है और आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनों का निर्माण हो जाता है।

मेरे पुत्रों! याग के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बड़ी मानो देखो लेखनियाँ बद्ध की हैं। अपना विचार दिया है। परन्तु उनके विचारों की जो उड़ान रही है वह बड़ी विचित्रतम उड़ाने रही हैं। जिस उड़ान के सम्बन्ध में ऋषि-मुनि बेटा! अपना-अपना वक्तव्य देते रहे हैं।

आओ मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा, हे देवी! तुम्हें ये प्रतीत हो गया होगा, ये तीसरा अन्न कहलाता है। इसे हुत कहते हैं। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है याग कर रहा है, हुत कर रहा है और देवताओं को अपना साकल्य और अपने मनों की वृत्तियों को प्रदान कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है, हे देवी! यही हुत कहलाता है, ये तीसरा अन्न कहलाता है।

चौथा अन्न–प्रहुत

चौथा जो अन्न है वह मानो देखो प्रहुत कहलाता है। हमें पुरोहित के लिए, हमारे आचार्यों ने ये कहा है कि वास्तव में यथार्थ जो पुरोहित

है वह तो परमपिता परमात्मा है। परन्तु दूसरा जो पुरोहित है वह जो पराविद्या को मानो सिमट करके, वह देने वाला है। अपनी जो विद्या है, जो धनुर्विद्या को प्रदान कराता है। देखो अश्वमेध याग में, ज्ञान को परणित कर देता है। अजामेध याग में परणित कर देता है। मेरे पुत्रों! देखो उसे पुरोहित कहा जाता है। वह **''पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मणाः क्रतम, देवत्वाम लोकाम् वर्णब्रहे क्रतम्''।** मेरे प्यारे! देखो वह पुरोहित कहलाता है। मुझे स्मरण आ रहा है, आओ बेटा! मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ। पुरोहित वह कहलाता है जो राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए सदैव मानो अपनी मनोवृत्तियों को प्रदान करता रहता है, वह ब्रह्म विद्या में रत्त रहता है। वह बाह्य मानो देखो वह अपने में भौतिक विज्ञान में रत्त रहने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अपनी स्थली पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो महात्मा वशिष्ठ ने कहा, ब्रह्मवेत्ता ने, हे विश्वामित्र! देखो मेरी इच्छा यह है कि तुम धनुर्याग करो। क्योंकि देखो, ये जो राष्ट्र चल रहा है ये राष्ट्र मानो देखो उन्नत होना चाहिए। समाज में एक महानता का प्रदर्शन होना चाहिए। इससे धनुर्याग करो। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने कहा, बहुत प्रियतम।

मुनिवरों! देखो वह आज्ञा पा करके वशिष्ठ मुनि महाराज की वह भ्रमण करते हुए बेटा! देखो अयोध्या में उनका गमन हुआ। अयोध्या में जब गमन हुआ तो राजा को जब ये प्रतीत हुआ कि आज तो महर्षि का आगमन हो रहा है। तो उन्होंने ब्रह्मणे आश्चर्य में हो करके कहा, क्या बिना सूचना के ऋषि का आगमन। मेरे पुत्रों! देखो जब राजा के समीप पहुँचे और राजा से ये कहा, अमृतम्, राजा ने अपने आसन को त्याग दिया। और आसन को त्यागने के पश्चात् उन्होंने कहा, आइए भगवन् विराजिए। वह विराजमान हो गए। उन्होंने कहा, **सम्भूति ब्रह्मणाः सम्भूति लोकाम् वाचन्नमम् ब्रहेअस्सुतम्।**

मेरे प्यारे! राजा दशरथ ने कहा, हे प्रभु! आप बिना सूचना के आए हैं, इसका क्या कारण है। हम जान नहीं पाए हैं, आप सूचना कर देते तो हम अपने वाहनों में आपको देखो, यहाँ आपका पदार्पण होता। आपके स्वागतार्थ के लिए सर्व नगरी और देखो राष्ट्र तुम्हारा, तुम्हारे लिए समर्पित होता। उन्होंने कहा कोई बात नहीं, मेरी इच्छा ऐसी बनी, परन्तु देखो मैं किसी कार्यवश आ पहुँचा हूँ। उन्होंने कहा, प्रभु! आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा, मुझे राजकुमार चाहिए। और मैं राजकुमारों के द्वारा, मैं अपने याग को सम्पन्न कराना चाहता हूँ। मैं दण्डक वनों में एक धनुर्याग कर रहा हूँ। तो उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम् भगवन्! मैं राजा हूँ, बाल्य तो किशोर हैं। प्रभु मैं आपके याग को सम्पन्न कराऊँगा। उन्होंने कहा, नहीं, मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, दोनों का ये विचार-विनिमय हो रहा था। इतने में राजलक्ष्मियों ने, जब ये श्रवण किया कि आज तो ऋषि का आगमन हो रहा है। तो बेटा! कौशल्या इत्यादि सर्व राजलक्ष्मियाँ, ये मेरे पुत्रों! देखो, वह भी ऋषि के दर्शनार्थ के लिए, ऋषि के चरणों की वन्दना और उनकी सेवा के लिए अव्रतम, मेरे पुत्रों! कुछ अन्न इत्यादि ले करके पहुँची। और उन्होंने बारी-बारी चरणों को स्पर्श किया। मेरे पुत्रों! कौशल्या जी ने कहा, कहो भगवन्! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा हे दिव्या! मैं अपने यहाँ एक दण्डक वन में याग करा रहा हूँ, धनुर्याग और मैं राजकुमारों को ले जाना चाहता हूँ। परन्तु राजा स्वीकार नहीं कर रहे हैं? उन्होंने कहा, कहो भगवन्, आप क्यों नहीं स्वीकार कर रहे हैं? उन्होंने कहा, हे देवी! मैं इसलिए स्वीकार नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि बाल्य किशोर हैं और मैं धनुर्याग को पूर्ण करूँगा। उन्होंने कहा, नहीं भगवन्,आप राजकुमारों को प्रदान कीजिए। क्योंकि ये हमारे पुरोहित हैं, पराविद्या के देने वाले हैं। मानो यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य, यदि ऋषि की सेवा नहीं कर सकते, अपने में अपनेपने को समा नहीं सकते तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा प्रभु! मेरे प्यारे! देखो जब कौशल्या जी ने इन शब्दों को उद्गीत रूप में गाया तो राजा ने स्वीकार किया। राजा मौन हो गए। मेरे पुत्रों! देखो, राजकुमारों को ले करके वे धनुर्याग करने के लिए तत्पर हो गए।

मुझे स्मरण आता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, एक सौ पचासी ब्रह्मचारी उनके विद्यालय में धनुर्याग की शिक्षा पान करते रहे। तो मेरे पुत्रों! देखो वह पुरोहित कहलाते हैं जो राष्ट्र और समाज के लिए सदैव मानो अपनी सुकामना और सुविचार और सुक्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहते हैं। मानो वे पुरोहित कहलाते हैं। इसीलिए पराविद्या को हमें विचारना चाहिए। हे देवी! **सृष्टि के पिता ने मानो चौथे अन्न की उत्पत्ति करते हुए कहा कि ये पुरोहित जो हैं, ये भी अन्नाद कहलाता है।** अन्नाद का अभिप्रायः है कि जिससे देखो संसार अपनी आभा में सदैव परणित रहा है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा, हे देवी! ये मानो देखो सात प्रकार का अन्न, मेरे पिता ने रचना में लाने का प्रयास किया है। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा **''पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मणाः लोकाम्, हिरण्यम् व्रथम ब्रहे क्रतम देवाः।''**

मेरे पुत्रों! देखो वह महाराजा विश्वामित्र उन राजकुमारों को ले करके दण्डक वनों में, मेरे पुत्रों! देखो, धनुर्विद्या को प्रदान कराने लगे। नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन करना, उनमें एक धनुर्याग भी है। जैसे बेटा! हमारे यहाँ वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, अश्वमेध याग है, अजामेध याग है। मेरे प्यारे! विष्णु याग है, रुद्र याग है, ब्रह्म याग है। नाना प्रकार के यागों में एक याग बेटा! देखो, धनुर्याग भी कहा जाता है। नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। तो आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार-विनिमय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का चिन्तन करते हुए और ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हुए, बेटा! उस परमपिता परमात्मा के स्वरूप को हम सदैव जानने वाले बने। ये है बेटा! आज का वाक्।

आज का वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, मुनिवरों! देखो, **महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज अपनी देवी को ये शिक्षा दे रहे थे, ये वर्णन करा रहे थे, क्या संसार में देखो ''ब्रह्मणेः व्रतम देवाः**

आत्माः'' मानो देखो **आत्मा के स्वरूप को जानने का प्रयास करो।** तो बेटा! ये चर्चाएँ, वह जो तीन अन्न रह गए हैं, उनकी चर्चाएँ मैं कल प्रगट कर सकूँगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, क्या परमपिता परमात्मा का विज्ञान, ज्ञान कितना अनुपम है, कितना देवत्व से मानो परिपूर्ण है। समय मिलेगा तो हम शेष चर्चाएँ बेटा! आगे तीन अन्नों की चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज मैंने चार प्रकार के अन्न की विवेचना की। ये भी बेटा! देखो, व्याख्या के रूप में नहीं केवल संक्षिप्त परिचय दिया और इससे आगे का परिचय हम कल दे सकेंगे।

आज का विचार बेटा! यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती का चिन्तन करते हुए और मुनिवरों! देखो उसमें रत्त रहते हुए वह परमपिता परमात्मा, बेटा! जितना भी ये जड़ जगत और चेतन्य जगत है, उस सर्वत्र दोनों प्रकार के ब्रह्माण्ड में जो ओतप्रोत हो रहा है। मानो उसको संचालन कर रहा है, वह परमपिता परमात्मा कहलाता है। आओ मेरे प्यारे! मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् ब्रह्माः आपाः आभ्याम् रथम् मा वायु गताः।
ओ३म् तनु गन्धर्व प्रजाहम् आभ्याम् देवाः।
यम रथश्च सञ्जनाः आप्याम् लोकाः।
ओ३म् वसुप्राची रथम् आभ्याम् लोकाः।

दिनाँक : 3 फरवरी, 1990
समय : सायँ 4 बजे
स्थान : श्री आलम सिंह
ए-42, शास्त्रीनगर
जोधपुर, राजस्थान

॥ ओ३म् ॥

आत्मा के स्वरूप

(द्वितीय-भाग)

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि ये जगत दो प्रकार का माना गया है– एक जड़वत् है तो द्वितीय चेतन्यवत् कहा जाता है। परन्तु **चेतना के गर्भ में ज्ञान और प्रयत्न रहता है** और जो ज्ञान और प्रयत्न से शून्य जगत है उसको जड़वत् माना गया है।

आत्म-चिन्तन

इसलिए हम ये विचारते रहते हैं कि वे परमपिता परमात्मा इतना अनूठा है और इतना ज्ञान और विज्ञानमयी है कि वे दोनों प्रकार के जगत में निहित रहते हैं। वे जड़वत् में भी हैं और चेतना में भी निहित रहते हैं परन्तु **ज्ञान और प्रयत्न, ये आत्मा का मौलिक गुण माना गया है।** परन्तु जड़म् ब्रव्हा कृतम देवाः और ये जो जगत है, जितने भी लोक-लोकान्तर हैं, जितना भी ये पिण्ड रूप है और पिण्ड में जो गतियाँ हो रही हैं वो सर्वत्र जड़वत् माना गया है। क्योंकि उनमें ज्ञान और प्रयत्न नहीं है। इसीलिए

हमारे आचार्यों ने कहा है, क्या वह जो परमपिता परमात्मा, जो अन्नतवान् है और इन दोनों प्रकार के जगत् में निहित रहने वाला है, वह हमारा पूज्य है और हमारा देवत्व माना गया है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें जिससे हमारा मनोनीत हृदय पवित्रता को प्राप्त होता रहे। और हम परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड में जितना भी ज्ञान और प्रयत्न है, मानो विज्ञान है, उसको जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। क्योंकि **यदि हम संसार की प्रत्येक वस्तु को अथवा परमात्मा की प्रतिभा को जब तक नहीं जानेंगे हमारे में प्रकाश नहीं हो सकेगा।** क्योंकि हमने इससे पूर्व काल में ये कहा है प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान काल तक ही अन्वेषण करता रहा है कि हमारा जीवन आनन्द में ही प्राप्त हो जाए और हम उसी के लिए ही सर्वत्र प्रयत्नशील रहते हैं। नाना प्रकार के द्रव्य का उपार्जन करते हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु में मानो हम रत्त रह करके उसको गम्भीरता से दृष्टिपात करते रहते हैं। परन्तु उनका केवल एक ही मन्तव्य होता है कि हमारे जीवन में मानो एक महानता की प्राप्ति हो जाए और हम महान् बन जाए। परन्तु **महान् वो व्यक्तित्व कहलाता है जिसका अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है।** और आत्मा यदि अन्तःकरण मानव का प्रसन्न नहीं है तो जितना भी संसार का वैभव है अथवा प्रतिभा है वो सर्वत्र न होने के तुल्य मानी गयी है। तो मुनिवरों! देखो आत्म चिन्तन होना बहुत अनिवार्य है और आत्मत्व में हम सदैव प्रसन्न रहें। और चित्रों रथम् ब्रह्माः, चित्र एक रथ की भाँति हम अपने में दृष्टिपात करते रहें।

प्रेरणा की प्रतिभा

आओ मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें एक प्रेरणा दे रहा है क्योंकि ये तो ये संसार सर्वत्र प्रेरणा का स्रोत है। एक-दूसरे से प्रेरणा प्राप्त करता रहता है और वह प्रेरित होता रहता है। संसार के नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव वो रत्त रहता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा जो प्रेरणा का स्रोत है, प्रेरणा की प्रतिभा कहलाता है हम उस

परमपिता परमात्मा की महती को जानने का सदैव प्रयास करें। क्योंकि इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें ये प्रगट कराया था क्या प्रत्येक मानव आनन्द को चाहता है और प्रकाश में रत्त रहना चाहता है। बेटा! वेदों का उद्गीत गाया जा रहा है। और वेद का जब उद्गीत गाया जा रहा है तो जिस समय वो हृदय से गान गाता है वह हृदय अगमता को प्राप्त होता हुआ, हृदयग्राही बन करके अपने में ही वो संतुष्ट हो करके अपने को ही प्राप्त करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो वह जो परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है वो बड़ा अनूठा माना गया है। मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ, क्योंकि विज्ञान अपनी आभा में सदैव नृत करता रहा है। और प्रत्येक मानव के मस्तिष्कों में सदैव विज्ञान की प्रतिभा का जन्म होता रहा है। और वह उसमें प्रयास करता रहा है।

साझा अन्न

मेरे पुत्रों! आओ, आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वामित्र अपने में धनुर्याग कर रहे थे। और वह मुनिवरों! देखो हमारे यहाँ प्रहुत कहा जाता है। मेरे पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में, बेटा! सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया था। तो मुनिवरों! देखो चार प्रकार का जो अन्न है वो सबका साझा अन्न कहलाता है। वह सबमें सम्मिलित रहने वाला है। मेरे प्यारे! माता जब भोजनालय में भोजन को तपायमान करती है तो अपने लिए नहीं कर रही है। वह मानो देखो सबका साझा अन्न है। मेरे प्यारे! देखो पय देने वाला रात्तम् प्राणीवृत्तम् देवत्वाम्, मेरे प्यारे! दुग्ध देता है वो भी साझा अन्न है। जो हुत कर रहा है यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अग्नि के मुखाबिन्दु में पदार्थों को प्रदान कर रहा है वह भी मुनिवरों! देखो सबका साझा अन्न है। वह आत्मा को प्राप्त होता है। वह मानो दिशाओं को प्राप्त होता है, वह मुनिवरों! पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। वह सूर्य की किरण अपनी आभा में परणित कर लेती हैं। चन्द्रमा की कान्ति अपने धारण करती हुई समुद्रों से मिलान

करती हैं, वही सोम बन जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में कितना विचित्रत्व माना गया है। तो विचार आता रहता है बेटा! ये चार प्रकार का, जो मैंने मानो चतुष प्रकार के देखो पुरोहितों की चर्चाएँ की हैं वास्तव में पुरोहित तो परमपिता परमात्मा है। **पुरोहित उसे कहते हैं जो प्रेरणा का स्रोत है, प्रेरणा को देने वाला है।** मेरे पुत्रों! एक मानव अपने में मानवीय चिन्तन कर रहा है और उसके चिन्तन में अशोभनीय चिन्तन हो जाता है तो उसे अन्तरात्मा से ही प्रेरणा प्राप्त होती रहती है और उसी प्रेरणा के आधार पर यदि वो अपने जीवन को तत्पर बना लेता है तो उसके जीवन का कल्याण हो जाता है और यदि मुनिवरों! देखो, उसकी अवहेलना कर देता है तो मानो नार्किक बन जाता है।

पुरोहित के स्वरूप

विचार आता रहता है कि वास्तव में यथार्थ स्वामी तो पुरोहित वह परमपिता परमात्मा है, जो प्रकाश के देने वाला है। अन्धकार से दूरी करने वाला है। जिसे वेदों ने बेटा! विष्णु कहा है। विष्णु कहते हैं परमपिता परमात्मा को जो पालन करने वाला है। पालना कर रहा है। पालना के स्रोत में बेटा! वास्तव में जब पर्यायवाची शब्दों में प्रवेश करने लगते हैं तो पर्यायवाची शब्दों में बेटा! विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो सृष्टि का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है, सत्य में ही रमण करने वाला है। वह ''सत्यमेव रमण ब्रहाः' मेरे प्यारे! देखो उसे विष्णु कहा जाता है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जब विष्णु की विवेचना प्रारम्भ होती है कि विष्णु क्या है। तो वेद का ऋषि कहता है **''पालनाति ब्रह्मणे विष्णुः''** मेरे प्यारे! जो पालना करने वाला है वही विष्णु कहलाता है। हमारे यहाँ आचार्यों ने इसके ऊपर विचार-विनिमय करते हुए कहा है कि जो भी पालना कर रहा है, उस पालना में माता भी आती है, उसी पालना में आत्मा भी आता है। उसी पालना में बेटा! सूर्य भी आता है। ये नाना पर्यायवाची शब्द हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आते रहते हैं।

मेरे पुत्रों! देखो जो पालना करने वाला है वही विष्णु कहलाता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा देखो पालना करता है क्योंकि सत्य के बिना पालना नहीं उत्पन्न होती तो इसीलिए उसका नाम विष्णु है। माता जब पालना करती है तो माता का नाम भी विष्णु है। क्योंकि वह मुनिवरों! देखो सतोगुण से शिक्षा दे रही है, लोरियों का पान करा रही है। वेद के आचार्यों ने तो यहाँ तक कहा है कि माता वो ममत्वाम् को प्राप्त हो जाती है जो माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करने वाली हो।

मेरे पुत्रों! बड़ा विचित्र एक वाक्य प्रगट कर रहा हूँ। वेद का मन्त्र कहता है **"ममत्वम् प्राणम् ब्रव्हे, क्रतम देवत्वाम् प्राणाम् ब्रहा क्रदम उदगय् प्रव्हे लोकाम् वर्चस्सुते।"** मेरे प्यारे! ये वेद का मन्त्र आता है। हे माता! जब तू महान् बनना चाहती है, महान् सन्तान को और देवत्व को जन्म देना चाहती है, तो उस समय मानो देखो, तू प्राण और अपान को अपने में धारण करने वाली बन। क्योंकि जब प्राण को अपान से, अपान को व्यान से और व्यान को समान में और समान को उदान में जब प्रवेश कर दिया जाता है तो मेरे प्यारे! देखो माता अपने गर्भ के आत्मा से, शिशु से वार्त्ता प्रगट करने लगती है।

मेरे पुत्रों! ये बड़ा विशिष्ठ एक विज्ञान और साधनामयी मानो देखो विचार माना गया है। मुझे स्मरण आता रहता है जब माता मदालसा के गर्भस्थल में यह आत्मा का जैसे ही प्रवेश होता था उसी समय मानो देखो वो प्राण और अपान का समन्वय करती बेटा! अपनी गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करके और ये वेद मन्त्र उद्गीत गाती– **कत्मास्वम्भवा कत्मास्वर्णम् ब्रहे।** मेरे प्यारे! देखो, ये आख्यायिका प्रगट करके जब आत्मा उद्गीत गाने वाला कि आत्मा तू सुसुज्य है, मानो पवित्रतम् है। और तू सदैव रमण करने वाला है। मेरे प्यारे! जब आत्मा से इस प्रकार की वार्त्ता माता प्रगट करती है, तो माता वो ब्रह्म में परणित करा रही है। तो मेरे प्यारे! देखो आज मैं इस सम्बन्ध में

विशेषता नहीं, केवल विचार-विनिमय ये मुनिवरों! देखो ये ममत्वम् ब्रह्माः व्रतम् देवाः। ये आत्मा, मेरे प्यारे! ये माता विष्णु कहलाती है जो सतोगुण से पालन कर रही है, रजोगुण में शासन कर रही है और तमोगुण में उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहती है।

एक-दूसरे के पूरक

मेरे प्यारे! विचित्रता तो ये है प्रभु की इस नियमावली में, क्या एक-दूसरे का एक दूसरा पूरक कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो सतोगुण, रजोगुण–वही रजोगुण है, वही सतोगुण है और वही तमोगुण माना गया है। परन्तु देखो रजोगुण और तमोगुण, सतोगुण एक-दूसरे का पूरक कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो वही, यदि तमोगुण नहीं होगा तो उत्पत्ति का मूल नहीं बन पाएगा। उग्रवाद में उत्पत्ति का मूल है। मेरे प्यारे! देखो, यदि रजोगुण नहीं होगा तो मुनिवरों! देखो उसमें शासन की प्रवृत्ति नहीं रहेगी। और यदि सतोगुण नहीं होगा तो बेटा! न तो रजोगुण रहेगा, न तमोगुण की प्रतिभा रहेगी। वह एक-दूसरे का पूरक नहीं हो पाएगा। इसीलिए एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे! मैं अपने विचारों को देता हुआ दूरी न चला जाऊँ। विचार-विनिमय केवल ये कि आज हम बेटा! हम ये उद्गीत गा रहे थे कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते हुए–मेरे पुत्रों! देखो महात्मा विश्वामित्र अपने में याग कर रहे थे। बेटा! मुझे वो काल जब स्मरण आने लगता है तो प्रायः हृदय गद्गद् हो जाता है। मैं ये कहा करता हूँ कि जहाँ अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण अथवा अस्त्रों-शस्त्रों की शिक्षा देना है वही तो धनुर्याग कहा जाता है। धनुर्याग का अभिप्रायः यह है कि बेटा! महर्षि विश्वामित्र अपने आसन पर विद्यमान हैं ब्रह्मचारी धनुर्विद्या के ऊपर अध्ययन कर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो विज्ञान में रत्त हो रहे हैं।

आत्मा का अन्न–प्राण, मन और विचार

मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! एक समय महर्षि विश्वामित्र की इस यज्ञशाला में अथवा विद्यालय में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का पदार्पण हुआ। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारिणी शबरी ये इत्यादि सब देखो विज्ञान में अभ्यस्थ थे और वे विज्ञान के एक-एक वेद मन्त्र को विज्ञान से कटिबद्ध करते रहते। बेटा! एक समय भ्रमण करते हुए वह महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में पधारे। महात्मा विश्वामित्र ने महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का स्वागत किया। क्योंकि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज विज्ञान में बड़े पारायण थे। उनके यहाँ विज्ञान की एक महानता का जन्म होता रहता था। मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषि का आगमन हुआ तो साँय काल के समय सर्वत्र ब्रह्मचारी अपने-अपने कक्ष से ऋषि के चरणों में उपस्थित हुए और वे विराजमान हो गए। तो मुनिवरों! देखो महर्षि विश्वामित्र ने कहा, क्या हे भगवन्! आप ब्रह्मवेत्ता भी हैं और विज्ञानवेत्ता भी हैं। आप परमाणु विद्या में बड़े पारायण हैं। हे प्रभु! ब्रह्मचारियों को कुछ शिक्षा प्रदान कीजिए। मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा क्या ये तो सर्वत्र तुम जानते हो। हे विश्वामित्र! आप तो धनुर्विद्या में पारायण रहे हैं। क्योंकि राजा से ऋषि हुए हैं और ऋषि से ब्रह्मवेत्ता बने हैं। और ब्रह्मवेत्ता और देखो वह धनुर्विद्या का दोनों का जिस पर सङ्गम हो अथवा जो स्वरों में गान गाने वाला हो, वह तो महान् ऋषि कहलाता है। भगवन्! आप ही इनको उद्गीत गाइये। उन्होंने कहा, नहीं भगवन्, मैं तो मानो देखो रोस्वधम्, मैं इनको नित्यप्रति अपना उपेदश प्रगट करता रहता हूँ। परन्तु आज तो आपका आगमन हुआ है। आप अतिथि हैं विद्यालय के, आप कोई न कोई उपदेश दीजिए। तो उन्होंने कहा, हे ब्रह्मणेः विराजो। तुम एक पंक्ति में विद्यमान हो जाओ। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों! ने एक पंक्ति लगायी। और वह बोले कि तुम्हें यह प्रतीत है कि मैं कञ्जली वनों में एक मानो देखो कि मैं अपने में एक विज्ञानशाला का मैंने निर्माण किया है। जिस

विज्ञानशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहता है। उन यन्त्रों में मानो देखो ऐसे-ऐसे ब्रह्मास्त्र हैं, मानो वरूणास्त्र हैं, वेतुक अस्त्र हैं जिसको जान करके देखो हम राष्ट्रों को भी समाप्त कर सकते हैं। परन्तु ऐसे-ऐसे यान हैं जिनमें विद्यमान हो करके एक-एक लोक में नहीं, हम देखो मङ्गल से, हम मङ्गल से चन्द्रमा के मध्य में जितने मण्डल हैं सर्वत्रता में एक ही मण्डल हमारा भ्रमण करता रहा है। मानो देखो इस प्रकार का विज्ञान तुम्हारे यहाँ भी होना चाहिए। मेरी इच्छा ये है कि तुम्हारे यहाँ एक अहिल्या प्रतिभा यन्त्रों का निर्माण होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि हमारे वैदिक साहित्य में अहिल्या के पर्यायवाची शब्द होते हैं। अहिल्या नाम पृथ्वी को कहते हैं, अहिल्या नाम रात्रि का है, अहिल्या नाम बुद्धि का है। मानो देखो अहिल्या के बहुत से पर्यायवाची शब्द माने गए हैं। अहिल्या का अभिप्राय ये है जो मेरे प्यारे! देखो जो सुवर्णियों में रत्त रहने वाली हो–जिस बुद्धि को हम मानो पवित्रता से जब हम धारयामि बनते हैं तो उस बुद्धि का नाम जो मेधावी प्रणव हो जाती है तो उस बुद्धि का नाम अहिल्या कहा जाता है। मेरे प्यारे! उस पृथ्वी का नाम अहिल्या है जो पृथ्वी मानो देखो वज्र, वज्र के तुल्य देखो वैसे ही उष्ण में परणित होने वाली हो और उसमें अन्न उत्पन्न किया जा सकता हो उस भूमि का नाम अहिल्या कहा जाता है। अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण भी होता रहा है। क्योंकि यन्त्रों का अभिप्रायः, क्या जो अहिल्या इस पृथ्वी के गर्भ के मानो देखो दस-दस योजन गर्भ के खनिज और खाद्यों को जो मानो देखो दृष्टिपात करने वाला हो, विज्ञान के द्वारा बेटा! वह अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण करता रहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था कि अहिल्या अपने में मानो बड़ी विशिष्ठ मानी गयी है अहिल्याम् भूतम् ब्रह्मणाः। मेरे प्यारे! देखो अहिल्याम् पृथ्वी, जो पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज तपायमान हो रहा है और उस तपते हुए खनिजों को जो जानने वाला है वही मुनिवरों! देखो अहिल्या को जानने वाला है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारे यहाँ नाना प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण होना चाहिए। एक समय मानो जब मैं महर्षि तत्व मुनि महाराज के आश्रम में जब अध्ययन करता रहा, तो मानो देखो अध्ययन करते-करते एक समय मानो क्योंकि मेरे पिता ने ये कहा था ''सम्भवे ब्रह्मणाः प्रमाणम् ब्रहे'' ये परमाणु विद्या को जानना चाहिए। मानो जब मैंने परमाणु विद्या को जानने के लिए तत्पर हुआ तो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के चरणों में विद्यमान हो करके मानो जहाँ उसमें वहाँ नाना प्रकार की शिक्षा थी, वहाँ एक निर्माणशाला भी थी। वहाँ निर्माणशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहा। हमारे यहाँ तत्व मुनि महाराज के यहाँ देखो एक यन्त्र का निर्माण हुआ था किसी काल में। उस यन्त्र को हमारे यहाँ **सौवृस्सतम् यन्त्र** कहा जाता था। उस यन्त्र में विराजमान हो करके मानो एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे ''तत्वेताम् भूतम्'' मेरे आचार्य ने एक समय कहा, जाओ तुम ब्रह्माण्ड में देखो, लोक-लोकान्तरों का कुछ भ्रमण करो। तो मानो यन्त्र में विद्यमान हो करके महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहाँ से एक यन्त्र मानो यान एक उड़ान उड़ता है। और वो उड़ान उड़ करके चन्द्रमा में जाता है। चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है, वह बुद्ध में जाता है और बुद्ध से उड़ान उड़ता है वह शुक्र में जाता है, शुक्र से उड़ान उड़ता है तो मङ्गल में जाता है और मङ्गल से उड़ान उड़ता है तो स्वाति में प्रवेश कर जाता है और स्वाति नक्षत्र से उड़ान उड़ता है तो मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो अरुन्धती में चला गया। अरुन्धती मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह वशिष्ठ मण्डल में प्रवेश कर गया और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो रोहिणी कृतिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और रोहिणी कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो भानमुक मण्डल में प्रवेश गया और भानमुक मण्डल से उड़ान उड़ता हुआ मुनिवरों! देखो मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो मूल नक्षत्र में प्रवेश कर गया। और मूल नक्षत्र से उड़ाने उड़ी तो

बेटा! देखो वह मानधुनि मण्डल में प्रवेश कर गया। बेटा! मैं लोकों की गणना करने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें ये परिचय देने के लिए आया हूँ क्या विज्ञान अपने कक्ष में बेटा! बड़े ऊर्ध्वा से गमन करता रहा है। और वो ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों में अथवा वेद मन्त्रों की प्रतिभा का अन्वेषण करता हुआ बेटा! विज्ञान अपने कक्ष में रमण करता हुआ मानवीयता की आभा में सदैव प्रवेश करता रहा है।

मुनिवरों! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारियों से कहा, हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा यह विद्यालय जब ही श्रेष्ठ बनेगा जबकि तुम्हारा मानो देखो ये जो विज्ञान है ये पराकाष्ठा पर रमण करने वाला हो। तुम्हारे देखो, मेरे विद्यालय में एक यन्त्र–हमारे यहाँ ये ब्रह्मचारी सुकेता हैं। इन्होंने इनकी सहायता से एक वेद मन्त्र का उद्गीत गया जा रहा था और वह वेद मन्त्र यह कह रहा था **''सम्भवे ब्रह्मणाः गर्भस्यतम् विश्वञ्जनम् ब्रहा क्रतम् देवो व्रतम्''।** मानो देखो ये वेद मन्त्र का जब उद्गीत गाया जा रहा था तो ये वेद मन्त्र यह कह रहा है क्या एक-एक रक्त के बिन्दु में मानव के चित्रों का दर्शन हो सकता है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, क्या हमारे यहाँ ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता और रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी देखो महर्षि पप्पेतु इत्यादि ऋषियों ने ब्रह्मचारियों ने विद्यमान हो करके और मानो देखो इस वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन किया। छः माह हो गए कि वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन करते-करते। अन्त में चरमसीमा पर पहुँचे। क्या इन्होंने मुनिवरों! देखो एक यन्त्र का निर्माण किया और इस यन्त्र में ये विशेषता थी, क्या एक रक्त का बिन्दु मानो देखो यन्त्र में प्रवेश करो और जिस मानव का रक्त का बिन्दु है, उसी का चित्र उन्हें साक्षात्कार दृष्टिपात आता रहता था।

मेरे प्यारे! देखो, जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये कहा कि तुम्हारा विद्यालय जब ही ऊर्ध्वा को प्राप्त होगा, जब ही महर्षि विश्वामित्र

का स्वपन पूर्ववत् हो सकेगा, जब तक तुम्हारे यहाँ इस प्रकार के ब्रह्मचारी और अध्ययन करने वाले मानवीयत्त्व को धारण करने वाले हों। तो मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी अपने में उन वाक्यों को श्रवण करते रहे। तो भारद्वाज मुनि ने कहा कि मेरे यहाँ हमारी विज्ञानशाला में इस प्रकार के यन्त्र हैं, ऐसी यज्ञशालाएँ हैं, जो स्वाहा उच्चारण करने मात्र से उनके चित्र यन्त्रों में दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि अग्नि की धाराओं पर प्रत्येक शब्दः मानो देखो उद्धृत होता हुआ वह द्यौ को प्राप्त होता रहता है। इसीलिए हमारे यहाँ याग को सर्वश्रेष्ठ क्रियाकलाप माना है ऋषि-मुनियों ने और विज्ञान ने। क्योंकि जो शब्द है, जो वेद मन्त्रों से गुथा हुआ शब्द होता है, साकल्य से गुथा हुआ शब्द होता है वह द्यौ को प्राप्त होता हुआ, जब वो गमन करता है अग्नि की धाराओं पर तो ये प्रदूषण को समाप्त करता हुआ और मुनिवरों! देखो वो द्यौ को प्राप्त हो जाता है।

मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष वाक्य तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ। जो ऋषि-मुनियों ने इस सम्बन्ध में बड़ा परिचय दिया है, उसी परिचय के आधार पर अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, क्या जब तुम विद्यालय से दीक्षा ले करके गमन करोंगे। **जिस विद्या का तुम अध्ययन करो, उसी विद्या पर तुम्हारा क्रियात्मक जीवन होना चाहिए।** यदि क्रियात्मकत्त्व में जीवन नहीं है तो ये विद्याध्ययन किया हुआ जो तुम्हारा ज्ञान है, जिसको तुमने उपार्जन किया है ये न होने के तुल्य बन जाएगा। ऐसा मुनिवरों! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने विचार व्यक्त किए और विचार देते-देते मुनिवरों! देखो अपने में मौन हो गए।

महर्षि विश्वामित्र उपस्थित हो करके बोले, क्या ऋषि ने अपना जो विचार दिया है, वह बड़ा भव्यतम् है। परन्तु मेरी इच्छा ये है कि जहाँ अपने भौतिकवाद की चर्चाएँ की हैं वहाँ आप एक आध्यात्मिकवादी

भी हैं, आप ब्रह्मवेत्ता भी हैं। तो ब्रह्म की भी कुछ चर्चाएँ हो जानी चाहिए। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, क्या हे ब्रह्मचारियों! देखो तुम्हारी जो जीवनचर्या है वह पवित्र होनी चाहिए। यदि तुम्हारी जीवनचर्या पवित्र हो जाएगी तो ये तुम्हारा राष्ट्र और समाज और गृह सब पवित्रत्त्व को प्राप्त हो जाएगा। जैसे माता-पिता अपने गृह को पवित्र बनाने के लिए मानो देखो बाल्य-बालिका को महान् बनाने के लिए माता-पिता ब्रह्म की चर्चा करते हैं। ग्रर्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा करते हैं। **अग्नि का अभिप्रायः ये है कि हमारे जो हृदय से उत्पन्न हुए जो शब्द हैं उन शब्दों में इतनी मानो गम्भीरता होनी चाहिए जिससे हम अपने गृह को स्वर्ग बना सकें।** तो गृह कैसे स्वर्ग बनेगा। मेरे पुत्रों! देखो, जब माता-पिता अपनी एकान्त स्थली पर विद्यमान हों तो वह मुनिवरों! देखो अपने में अपनेपन की चर्चाएँ करते चले जाएँ। आत्म-चिन्तन करते चले जाएँ ग्रर्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करें। प्रातःकालीन याग होना चाहिए। उस याग में विचार होना चाहिए और उन विचारों को, मानव दर्शनों की भाषा को मेरे प्यारे! देखो गृह में बाल्य-बालिका जब सब श्रवण करते हैं तो मुनिवरों! देखो गृह स्वर्ग बन जाता है। गृह यदि स्वर्ग बनाना है, विद्यालय को स्वर्ग बनाना हो तो आचार्य तपस्वी और ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता की आभा उसमें होनी चाहिए जिससे उसके आन्तरिक जो विचार हैं और बाह्य जो जगत है, दोनों उसका सजातीय होने चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज मुनि महाराज का जीवन, आन्तरिक जीवन भी ऐसा ही था, बाह्य जीवन भी इसी प्रकार का। मेरे पुत्रों! देखो वह बाल्य-बालिका सर्वत्र उनके जीवन से शिक्षा अध्ययन करते रहते थे। शिक्षा जो प्राप्त होती है वह द्वितीय जो प्रेरणा का एक प्रीति माना गया है उसी से उसको प्राप्त होती रहती है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ, आचार्य ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! तुम देखो प्राण को अपान में प्रविष्ट

करने का प्रयास करो। क्योंकि जो भी मानव आध्यात्मिकवादी बनना चाहता है वह आत्मा में चिन्तन करने वाला होना चाहिए। क्योंकि जब वह प्राण और अपान को और अपान को व्यान में और व्यान को समान में, समान को उदान में जब मिलान करना जानता है तो मानो देखो आत्मा का जो क्षेत्र है, आत्मा का जो लोक है, मेरे प्यारे! देखो उसमें पवित्रता को वो दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है, जब हम अपने पूज्यपाद गुरु ओं के द्वारा अध्ययन करते थे तो प्रातःकालीन वह प्राण की प्रतिष्ठा के ऊपर वर्णन करते रहते थे। **प्राण की प्रतिष्ठा क्या है?** मेरे पुत्रों! देखो प्राण हमारे हृदय में सुसज्जित, हमारे में गतिवान् होना चाहिए। और **जब प्राण से हम यह विचारते हैं कि अरबों खरबों परमाणु, मेरे प्यारे! बाह्य जगत से आन्तरिक जगत में आते हैं और आन्तरिक जगत से बाह्य जगत में चले जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वो प्राण कहा जाता है।** वह ''प्राणस्वम्धम् ब्रव्हे'' जब मन और प्राण को, दोनों का मिलान करा दिया जाता है तो बेटा! एकाग्रता होनी प्रारम्भ हो जाती है और वही देखो जब एकाग्र होना प्रारम्भ होता है तो उससे विचारों की उपलब्धियाँ होती हैं और वही विचार मेरे पुत्रों! देखो इन्द्रियों के ऊपर घटित हो जाता है। महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा है ''अमृताम् देवत्वाम्'' देखो जब मानव नेत्रों के ऊपर अध्ययन करता है, **नेत्रों का जो विषय है वह रूप है।** और रूप को तुम दृष्टिपात करते रहो, दृष्टिपात करते रहो, मानो यन्त्रों से दृष्टिपात करते रहो। देखो समाधि में प्रवेश हो जाओ। दृष्टिपात करते अन्त में बेटा! देखो ये सीमाबद्ध हो जाता है। दृष्टिपात, मानो दृष्टिवान देखो उतनी सीमा में सीमित हो जाता है। इसी प्रकार जब शब्दों के ऊपर बेटा! शब्द अपने में ग्रहण करने लगता है। ध्वनियाँ आ रही हैं, वह ध्वनित हो रहा है। मेरे प्यारे! मानव वाणी से उद्गीत गा रहा है। उसके शब्द आ रहे हैं। मानो देखो उसके शब्द आ रहे हैं, उसका चित्र आ रहा है। वह मस्तिष्क में उसका निर्माण हो रहा है, वही शब्द मेरे प्यारे! देखो दिशाओं में भ्रमण करने लगता

है। वही शब्द है मेरे पुत्रों! जो अन्तरिक्ष में एक ध्वनि बन करके रहता है। वही शब्द है, मेरे प्यारे! देखो, योगी समाधिष्ठ हो करके अपने अनहद में मानो जो अनहद बाह्य स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं मस्तिष्क में, जो मेरे प्यारे! देखो तरङ्गे, आपस में तरङ्गों का मिलन हो रहा है, उसमें जो धीमी ध्वनियाँ हो रही हैं उन्हें वो स्वर सङ्गम बना करके अपने में धारण कर रहा है।

मेरे पुत्रों! देखो वही अमृतम्, वही मुनिवरों! देखो व्याकरण के रूप में, शब्दों की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। वही ध्वनि देखो, आन्तरिक जगत में प्रवेश कर रही है। मेरे प्यारे! अन्त में देखो वह महा, वह महापुरुष ध्वनि को ध्वनित करता हुआ, बेटा! अपने में सीमित हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, सुगन्ध आ रही है। और वह सुगन्धी मुनिवरों! देखो वह अपने में सुगन्धी को धारण कर रहा है। यदि वो अध्ययन करता है तो पृथ्वी के एक-एक कण में से उसे सुगन्धी आ जाती है और वह सुगन्धी मुनिवरों! देखो इतनी विचित्र बन करके रहती है। मुझे स्मरण है, भगवान् राम को इतनी सुगन्धी मानो सिद्ध थी क्या वह मुनिवरों! देखो पृथ्वी के कणों से सुगन्धी ले करके दस-दस योजन के नीचे पृथ्वी के गर्भ के मुनिवरों! देखो खनिज का वो निर्णय दे देते थे। इस प्रकार की मुनिवरों! देखो सुगन्धी होनी चाहिए। जिससे वो सुगन्ध लेता हुआ घ्राण के द्वारा जो प्रभु ने एक यन्त्र निर्माणित किए हैं उन यन्त्रों के द्वारा मुनिवरों! सुगन्धित होता रहता है। अन्तरिक्ष के परमाणुओं को जो सुगन्धित करता हुआ, मुनिवरों! देखो अपने में निर्णय देता रहता है। अन्त में विचार-विनिमय करता-करता, सुगन्ध करता-करता, बेटा! वह भी सीमाबद्ध हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो जब रसना के क्षेत्र में जाता है, नाना प्रकार का स्वादन अपने में ग्रहण करने लगता है, वह रसना का विषय है। रसों को लेता रहता है। जल में कितने प्रकार के परमाणुओं का गमन होता रहता है। मानो देखो पृथ्वी गुरु त्त्व में कितने परमाणुओं का आदान प्रदान होता रहता

है। मेरे पुत्रों! देखो ये अग्नि अपने में तेजोमयी बन करके, ये सुगन्ध और दुर्गन्ध को ले करके गमन कर रही है वह मुनिवरों! देखो, रस उसे अपने में रसास्वादन कर रहे हैं। अपने में ग्रहण कर रही है। अन्त में ये होता है कि वह मुनिवरों! वह अणु और परमाणुओं पर गतिवान हो जाता है। क्योंकि तीन प्रकार के परमाणु विज्ञान में स्वीकार किए गए हैं। जिन्हें मेरे प्यारे! देखों गुरु त्त्व, तरलत्त्व और तेजोमयी, ये तीन प्रकार के परमाणुओं पर बेटा! देखो विज्ञान अपने में स्थिर रहता है। तो विचार आता रहता है। उन्हीं परमाणुओं में बेटा! वो अपने में रसास्वादन करने लगता है। अन्त में बेटा! देखो स्पर्शस्ता में वायु को वेग में गमन करते हुए कोई ये निर्णय दे देता है महापुरुष, क्या इस अग्नि में देखो अमुक प्रकार का परमाणु गमन कर रहा है। ये शीतल है। मानो ये उष्ण है। नाना देखो उष्णता में ये प्रतिभा और तरलत्त्व में भी ये प्रतिभा है। ये निर्णय देता हुआ बेटा! देखो इसको हमारे यहाँ पञ्चीकरण कहते हैं। ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ का विषय है और इसका मुनिवरों! देखो योगी जब अपने में साकल्य बना लेता है और साकल्य बना करके बेटा! हृदयरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसमें जब इस साकल्य का हुत कर देता है तो मेरे प्यारे! देखो परमात्मा का हृदय, मानव के हृदय का दोनों का बेटा! देखो अपने में परस्पर समन्वय हो जाता है। वह मेरे पुत्रों! देखो आनन्द को प्राप्त हो जाता है।

मोक्ष की पगडण्डी

आओ मेरे प्यारे! देखो मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। ये तो बड़े गम्भीरतम रहस्य हैं जिनको मैं उद्गीत रूप में गाता रहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि कहता है **"ब्रह्मणे क्रतम् देवाः"** मेरे प्यारे! देखो उस समय महर्षि पिप्पलाद ने अपनी पत्नी से कहा, हे देवी! ये मानो देखो महर्षि विश्वामित्र की यज्ञशाला में देखो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को आध्यात्मिकवाद की चर्चा की। और उन्होंने कहा, ये तीन प्रकार का अन्न कहलाता है। ये मानो जो इन्द्रियों

में समाहित रहता है। तीन प्रकार का अन्न है **अन्नम् भूतम् ब्रह्मणाः** देखो जिसको हम अमृतम देखो, मन, प्राण और विचार ये तीन प्रकार का अन्न है जिस अन्न के पान करने से हमें आत्मा की सिद्धि हो जाती है। इन्द्रियाँ वश में हो जाती है और मन और प्राण का जब सम्मेलन होता है, समागम होता है तो उस समय देखो वह विचारों में प्रतिभा आ जाती है। **मन, कर्म और विचार जब विचार में महानता आ जाती है तो मुनिवरों! देखो हृदयरूपी यज्ञशाला में बेटा! वो याग करता है।** उन्हीं विचारों का साकल्य बना करके, उन्हीं विचारों का चरू बना करके बेटा! हृदयरूपी यज्ञशाला में वो याग करता हुआ मेरे प्यारे! देखो परमात्मा में हुत करता है। वह **"हृदयम् ब्रह्मणाः हृदयम् दिव्याम् भूतम्"।** मेरे पुत्रों! देखो हृदय का जब सम्मिलान होता है तो वही मुनिवरों! देखो मोक्ष की पगडण्डी कही जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ये आध्यात्मिकवाद की चर्चाएँ की। और उन्होंने कहा कि **आध्यात्मिकवाद के आगे ये जो भौतिक विज्ञान है, ये न होने के तुल्य है।** तुम्हें ये प्रतीत है, क्या जहाँ ये भौतिक विज्ञान समापन होता है, वहाँ से आगे आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ करता है। मेरे प्यारे! आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान, जब दोनों का समन्वय होता है, उसी काल में मुनिवरों! देखो ये संसार महानता को प्राप्त हो जाता है।

शेष अनुपलब्ध

दिनाँक : 4 फरवरी, 1990
समय : सायँ 4 बजे
स्थान : श्री आलम सिंह
ए-42, शास्त्रीनगर
जोधपुर, राजस्थान

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. हमारे विचारों में जहाँ क्रान्ति आती है वहाँ शान्ति भी आती है।
2. एक यौगिक क्रान्ति होती है और दूसरी स्वार्थ के वशीभूत होती है।
3. पूर्ण योगी उसे कहते हैं जब उसकी आत्मा, ज्ञान और प्रयत्न को एकाग्र करके परमात्मा से मिलान करता है।
4. मुक्ति उसे कहते हैं जहाँ ज्ञान और प्रयत्न एक स्थान में मिल जाते हैं।
5. अति कामनाओं का उत्पन्न होना तृष्णा कहा जाता है।
6. सबसे बड़ा जो सूक्ष्म ऋण है वह है देवताओं का ऋण।
7. ऋण वह होता है कि जिस कार्य के लिए हम आए हैं उस कर्त्तव्य को ना करें तो वह सबसे बड़ा ऋण कहलाता है।
8. आज वह मानव कितना सौभाग्यशाली होता है जो निस्वार्थ कार्य करने वाला हो, सुगन्धि को ओत-प्रोत करने वाला हो।
9. वेद ज्ञान परमात्मा ने आत्मा के लिए निर्धारित किया है।
10. आत्मा का ज्ञान मानव को परमात्मा के आङ्गन के द्वार तक पहुँचाने वाला बन जाता है।
11. एक भौतिक विज्ञानवेत्ता की केवल सूर्य मण्डल तक सीमा होती है और आध्यात्मिकवाद की सीमा परमात्मा तक होती है।
12. संसार एक कल्पवृक्ष है यहाँ जो कल्पना, आस्था सहित करोंगे वही तुम्हारी पूर्ण होगी।
13. प्रयत्नशील मानव ही अपने में ज्ञानमयी ज्योति को जागृत कर सकता है।
14. इस संसार में जब मानव को ज्ञान हो जाता है उसके पश्चात् वह मानवता की पवित्र वेदी पर विराजमान हो जाता है।
15. आत्मा का शरीर में आने का उद्देश्य केवल यह है कि हम कर्मशील बनें और कर्म के उपासक बनें।
16. मुक्ति कर्मण्यता से, त्याग और तपस्या से प्राप्त होती है।
17. विज्ञान के साथ-साथ मानव में ज्ञान की मात्रा, विवेक की मात्रा होना बहुत अनिवार्य है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋणों की चर्चा आती है। आज मैं उन ऋणों की चर्चा में जाना नहीं चाहता हूँ, केवल अपने प्यारे प्रभु का गुण-गान गाते हम अपना अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं। प्रायः सभी मानवों का यह कर्त्तव्य हो जाता है—**प्रातःकाल की अमृतमयी वेला में जागरुक हो जाने के पश्चात् प्रभु का चिन्तन करना, उसकी महिमा को विचारना मानव का एक महान कर्तव्य हो जाता है।** आज कोई मानव यह कह रहा है कि मैं किसी प्राणी के लिए यह कार्य कर रहा हूँ या चेतना के लिए ईश्वर तत्व के लिए परन्तु यह नहीं माना जाता। **सँसार में जो भी कर्म करता है वह मानव स्वयं अपने ही लिए करता है। अपनेपन में ही उसे प्रसिद्धि प्राप्त होती है।** अपनेपन में ही उसे नाना प्रकार से उसका आत्म हृदय उसको धिक्कारने लगता है परन्तु जिसका अन्तरात्मा धिक्कारता है उस मानव को ही सँसार में जीने का अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। क्योंकि जीवन उन प्राणियों को सदैव प्राप्त होना चाहिए जिनको अपनी आत्मा पर, स्वयँ की प्रवृत्तियों पर विश्वास और श्रद्धा नहीं होती उस मानव का अन्तरात्मा उसको धिक्कारता रहता है परन्तु वह सदैव अपने प्रकृति के आवेशों में आ करके अपनी प्रतिभा को ऐसे प्राप्त कर देता है जैसे सायँकाल के सूर्य की किरणें अस्त हो जाती हैं। मानव का सँसार में एक ही कर्तव्य रहता है कि दुर्गुणों को त्यागना और शुभ कर्मों को अपनाना। यह मानव का विचित्र कर्तव्य होता है। जिनके ऊपर मानव को अध्ययन करना है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 570
मार्च 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-3-2020
Published on 5th day of the same month